रूसी परी कथा

चित्र: ए. सवचेंको

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

छोटी लड़की और हंस
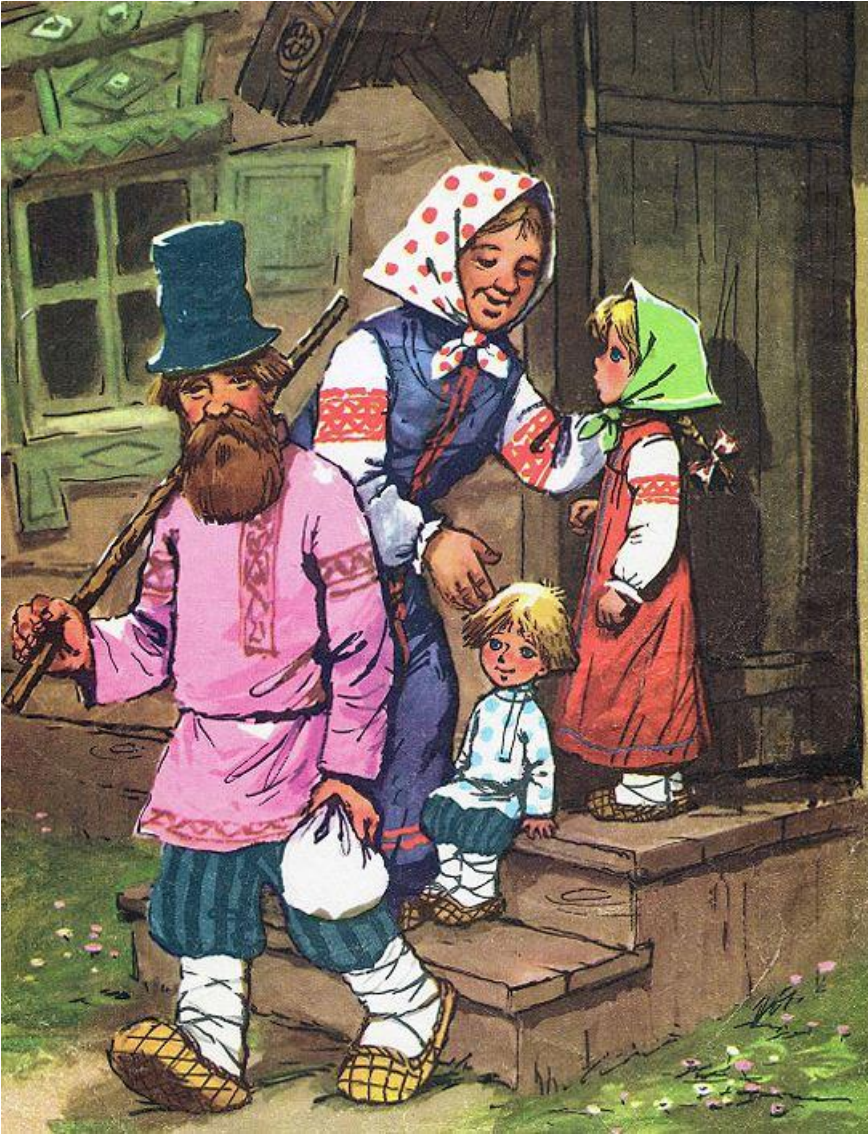
एक बार एक किसान और उसकी पत्नी थे. उनकी एक छोटी लड़की और एक छोटा लड़का था.

"बेटी," माँ ने अपनी छोटी लड़की से कहा, “देखो, हम कुछ काम के लिए बाहर जा रहे हैं, इसलिए हमारे पीछे अपने छोटे भाई का ध्यान रखना. यदि तुम अच्छी तरह से भाई का ख्याल रखोगी और बाहर सड़क पर खेलने नहीं जाओगी तो हम तुम्हारे लिए एक नया रूमाल खरीदकर लाएंगे."

पिता और माँ चले गए, और छोटी लड़की ने वो कभी सोचना बंद नहीं किया जो उसे बताया गया था. उसने छोटे भाई को खिड़की के नीचे घास पर बैठाया, और वो बाहर सड़क पर भाग गई और सब कुछ भूलकर अपने दोस्तों के साथ खेलने लगी.

अचानक हंसों का एक झुंड उड़ता हुआ आया. उन्होंने झपट्टा मारा, छोटे भाई को पकड़ लिया और उसे अपने पंखों पर उठाकर ले गए.

छोटी लड़की घर आई, उसने देखा, छोटा भाई चला गया था. लेकिन अफसोस! वह इधर-उधर भागी, लेकिन भाई का कुछ पता नहीं चला.

उसने उसे बुलाया, और वह रोती और सिसकती रही, यह कहते हुए कि वह उसके पिता और माँ से शिकायत करेगी, लेकिन छोटे भाई ने उसे कोई जवाब नहीं दिया.
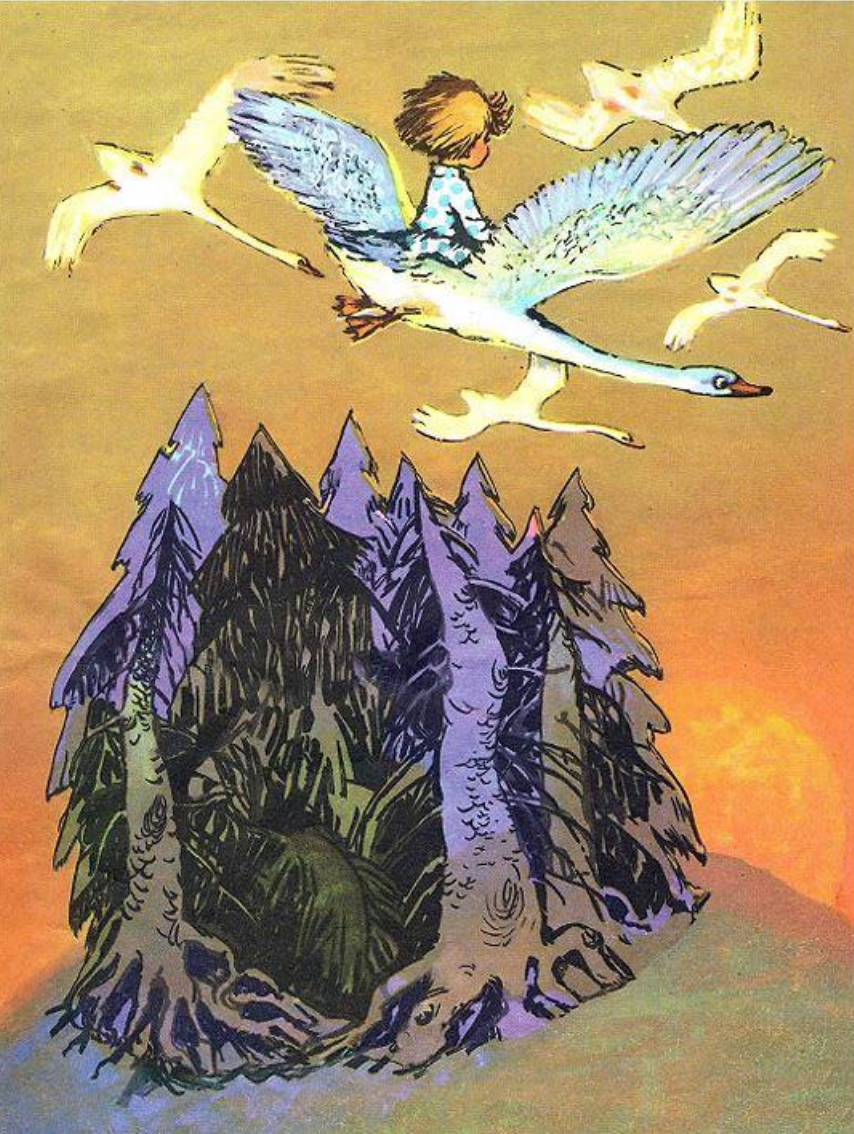
वह बाहर खुले मैदान में भागी लेकिन अंधेरे जंगल से परे उड़ने वाले कुछ हंसों के अलावा उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया. तब उसे पता चला कि वे हंस ही उसके भाई को उठाकर ले गए थे: कुछ लोगों ने कहा कि हंस दुष्ट पक्षी होते हैं और वो छोटे बच्चों को चुराते हैं.
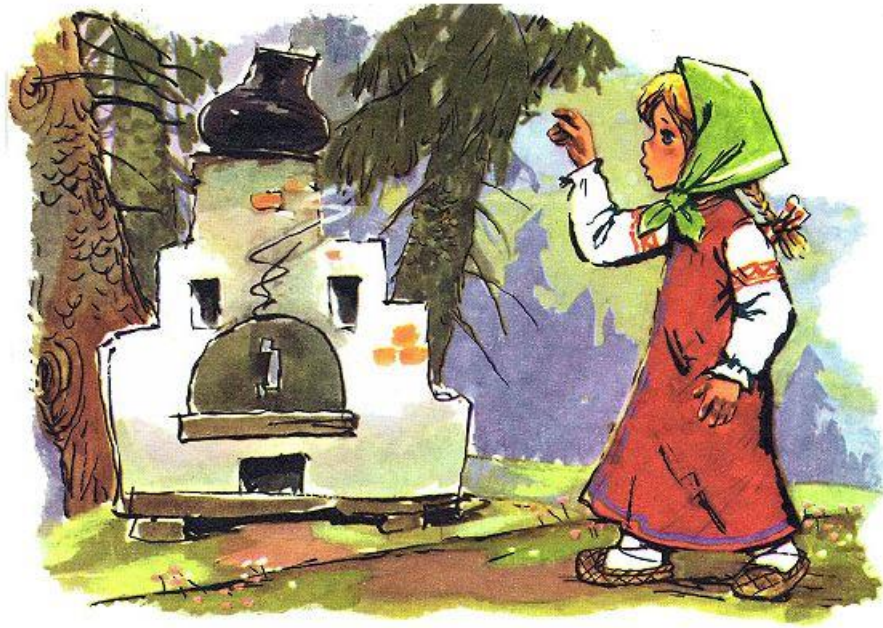
फिर छोटी लड़की पक्षियों के पीछे भागी. वह दौड़ी और वह तब तक दौड़ती रही जब तक वह एक भट्टी के पास नहीं पहुंची.

"भट्टी, भट्टी, मुझे बताओ कि हंस कहाँ उड़कर गए हैं."

"मेरा एक रागी का केक खाओ और फिर मैं तुम्हें बताऊंगी," भट्टी ने कहा.

"मैं रागी का केक क्यों खाऊं? हम तो घर पर कभी गेहूँ के केक भी नहीं खाते!"

फिर भट्टी ने उसे कुछ नहीं बताया. छोटी लड़की थोड़ी दूर दौड़ी और उसे एक सेब का पेड़ दिखाई दिया.

"सेब के पेड़, सेब के पेड़, मुझे बताओ कि हंस कहाँ उड़कर गए हैं."

पेड़ ने कहा, "मेरा एक जंगली सेब खाओ और फिर मैं तुम्हें बताऊंगा."

"घर पर हम अपने बगीचे के सेब तक नहीं खाते हैं!"

फिर सेब के पेड़ ने भी लड़की को कुछ नहीं बताया.

छोटी लड़की तब तक दौड़ती रही जब तक वह एक दूध की नदी तक नहीं पहुंची.

"दूध की नदी, मुझे बताओ कि हंस कहाँ उड़कर गए हैं."

"दूध के साथ मेरी कुछ जेली खाओ और फिर मैं तुम्हें बताऊंगी."

"घर पर हम कभी क्रीम और जेली नहीं खाते हैं."
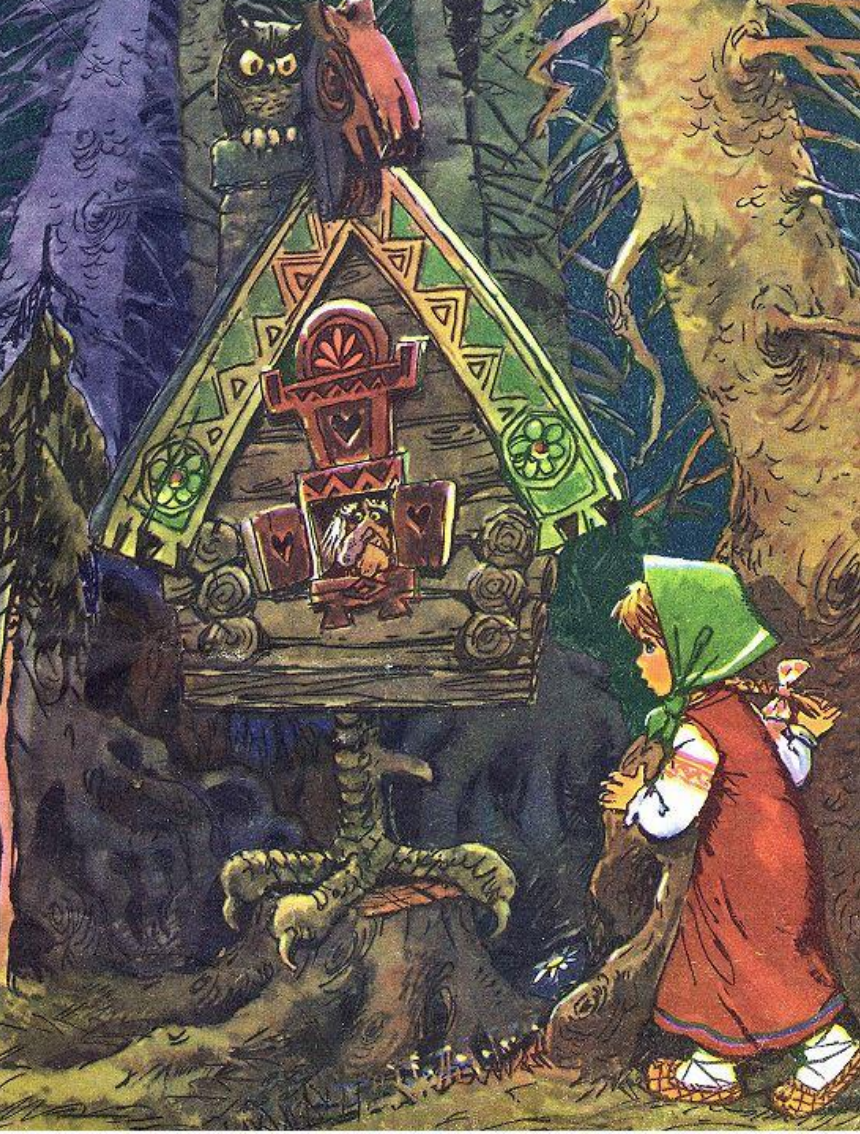
फिर दूध की नदी ने भी उसे कुछ नहीं बताया.

छोटी लड़की बहुत देर तक खेतों और जंगलों में दौड़ती रही. और अब दिन ढलने को आ रहा था, और घर जाने के सिवा उसके पास कोई चारा नहीं था. तभी उसे मुर्गी के पैरों पर एक झोपड़ी दिखाई दी. वो बहुत साफ सुथरी थी और बिना किसी आवाज के गोल-गोल घूम रही थी.
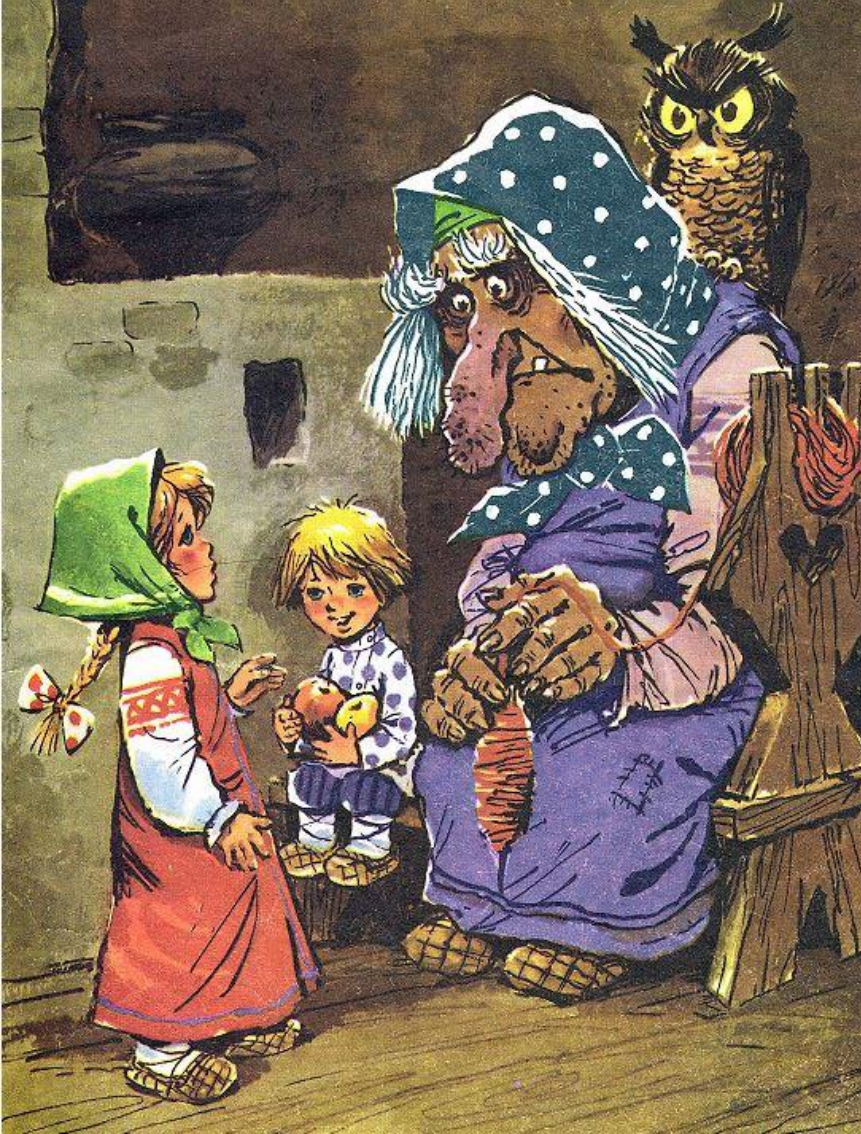
झोपड़ी में एक खिड़की थी, और झोपड़ी के अंदर बाबा-यागा, चुड़ैल बैठी थी, जो तकली के कताई कर रही थी. और बेंच पर उसका छोटा भाई बैठकर चांदी के सेबों से खेल रहा था.

छोटी लड़की अंदर गयी.

"शुभ संध्या, दादी!"

"शुभ संध्या, बेटी. तुम्हें यहाँ क्यों आई हो?"

"मैं पूरे दिन खेतों और जंगलों में चलती रही हूं, दलदलों और झाड़ियों के बीच से होकर गुजरी हूं. मेरी फ्रॉक गीली हो गई है, इसलिए मैं गर्म होने के लिए आपके पास आई हूं."

"फिर बैठ जाओ और कुछ कताई करो."

बाबा-यागा ने छोटी लड़की को कताई थमा दी और वो खुद बाहर चली गई. छोटी लड़की वहीं बैठकर कताई करती रही. तभी अचानक एक चूहा चूल्हे के नीचे से निकला और उससे बोला:

"लड़की, लड़की मुझे कुछ दलिया दो और फिर मैं तुम्हें कुछ बताऊंगा."

छोटी लड़की ने उसे कुछ दलिया दिया, और फिर चूहे ने कहा:

"बाबा-यगा स्नान-घर में आग जलाने के लिए गई है. वह तुम्हें भाप से धोएगी, फ़िर् भट्टी में भूनकर तुम्हें खा जाएगी, और फिर तुम्हारी हड्डियों पर लोट लगाएगी."
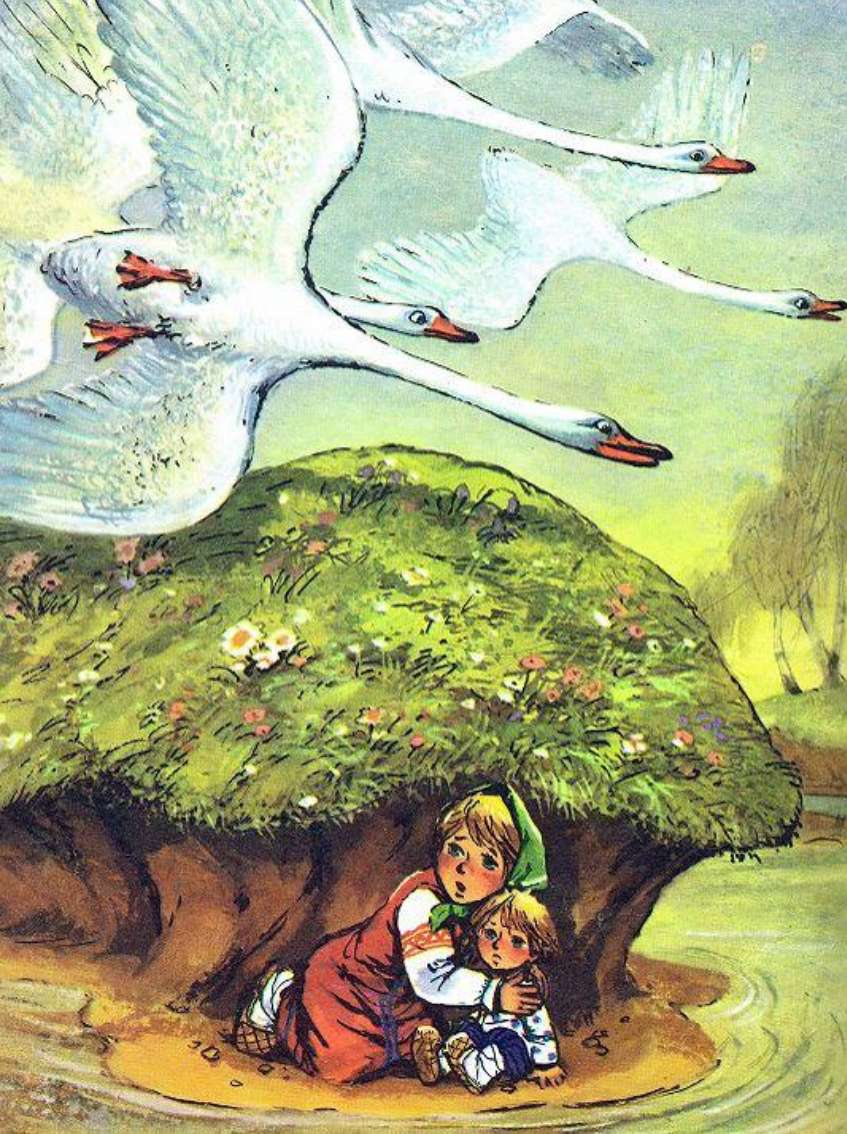
छोटी लड़की जीवित से अधिक मृत हो गई थी. वह रोती और सिसकती रही, लेकिन चूहा ने कहा:

"जल्दी करो, छोटे भाई को लेकर तुरंत भाग जाओ, और मैं तुम्हारे लिए तकली घुमाता रहूंगा."

फ़िर् छोटी लड़की ने छोटे भाई को अपनी बाहों में लिया और भाग गई. बाबा यागा बीच-बीच में खिड़की के पास आती और उससे पूछती थी:

"क्या तुम तकली घुमा रही हो, बेटी?"

और चूहा उत्तर देता था: "हाँ, मैं घुमा रही हूँ, दादी."

बाबा-यागा ने स्नानघर में आग जलाई और फ़िर् वो छोटी लड़की को लेने आई. लेकिन झोपड़ी खाली निकली.

बाबा-यागा चिल्लाई: "चलो, हंसों उड़ो और उन्हें पकड़ो! छोटी लड़की, अपने छोटे भाई को लेकर भाग गई है!"

छोटी लड़की तब तक दौड़ती रही जब तक वह दूध की नदी तक नहीं पहुंच गई. फिर उसने अपने और छोटे भाई के पीछे आने वाले हंसों को देखा.

"दूध की नदी, दूध की नदी, मुझे जल्दी से छिपाओ!" छोटी लड़की चिल्लाई.

"पहले टूमे मेरी कुछ फ्रूट जेली खाओ."

छोटी लड़की ने कुछ जेली खाई और उसे धन्यवाद दिया. फिर दूध की नदी ने लड़की और उसके भाई को अपने फ्रूट-जेली किनारों की छाया में छिपा दिया.

हंसों ने उन्हें नहीं देखा और वे उड़ गए.

छोटी लड़की फिर दौड़ी. लेकिन हंस मुड़े और सीधे उसकी ओर उड़े. किसी भी क्षण वे उसे देख सकते थे.

छोटी लड़की अब क्या करे? वह दौड़ी और तभी उसे सेब का पेड़ मिला.

"सेब के पेड़, सेब के पेड़, मुझे जल्दी से छिपाओ!"

"तुम पहले मेरे जंगली सेब खाओ."

छोटी लड़की ने तुरंत एक सेब खाया और उसे धन्यवाद दिया. फिर सेब के पेड़ ने लड़की और उसके छोटे भाई को अपनी पत्तियों और शाखाओं के बीच छिपा दिया.

हंसों ने उन्हें नहीं देखा और वे उड़ गए.
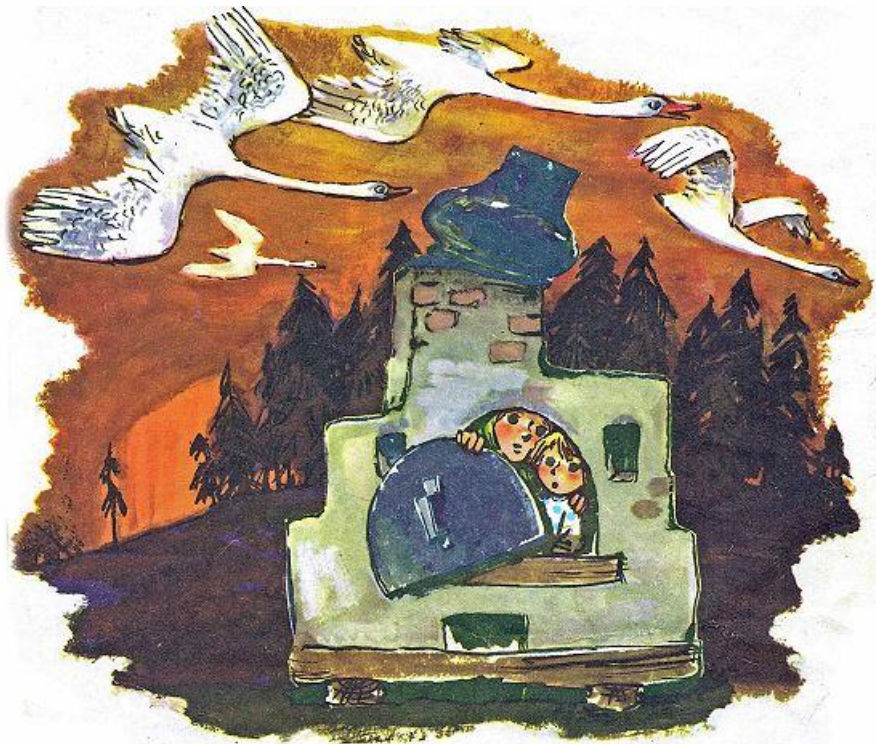
छोटी लड़की ने अपने भाई को उठाया और वो फिर से दौड़ पड़ी. वह दौड़ती रही और वह भागती रही और वो घर के बहुत करीब पहुंची थी तभी हंसों की नजर उस पर पड़ी. हंस ज़ोर से चिल्लाये और उन्होंने अपने पंख फड़फड़ाये, फिर एक ही मिनट में वो उसके छोटे भाई को उसकी बाँहों से छीन सकते थे.

तभी छोटी लड़की भट्टी तक भागी.

"भट्टी, भट्टी, मुझे जल्दी से छिपाओ!"

"तुम पहले मेरा एक रागी केक खाओ."

छोटी लड़की ने केक का एक टुकड़ा अपने मुँह में डाला और फिर खुद अपने भाई के साथ भट्टी में छिप गई.

हंस चिल्लाते और हॉर्न बजाते हुए इधर-उधर उड़े, लेकिन थोड़ी देर बाद उन्होंने लड़की को छोड़ दिया और वापस बाबा-यागा के पास उड़ गए.

छोटी लड़की ने भट्टी को धन्यवाद कहा और फिर वो अपने भाई के साथ घर भाग गई.

फिर कुछ ही देर में उसके मम्मी-पापा भी घर आ गये.